International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 03-05

नवगीतकार नीरज के गीतों में प्रेम के विविध रूप

डॉ0 सीमा यादव

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मयंक शेखर महाविद्यालय, कोरौवा, कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्रेम और सौन्दर्य की भावनाओं का मानव जीवन में सर्वाधिक महत्व है। ये भावनाएँ मानव प्राणियों की ही सम्पत्ति नहीं, ये मानवेतर जगत में भी परिव्याप्त हैं। जीव–जगत और उससे बढ़कर वनस्पति जगत में भी प्रेम और सौन्दर्य की चेतना आश्चर्यजनक रूपों में दिखाई देती हैं। तात्पर्य यह है कि प्रेम भाव का चराचर जगत एवं जीवन में शाश्वत स्थान व महत्व है।

नवगीतकार नीरज जी के विषय में यह बात बिल्कुल सही है कि कवि सम्मेलनों के मंच से जो लोकप्रियता किसी समय 'बच्चन' जी को मिली थी, उसे नीरज ने अपनी स्वर लहरी से, अपने श्रम से अपने नाम कर लिया। नीरज ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के द्वारा सर्वाधिक लोकप्रियता पाई है। नीरज जी मुख्यतः गीतकार है, उन्होंने जीवन के हर क्षण को जैसा जिया, जैसा महसूस किया, ठीक वैसा ही चित्रित किया है। हम कह सकते हैं कि उनका काव्य और व्यक्तित्व परस्पर जुड़े हैं, वे एक भावुक कवि हैं।

डॉ0 सुरेश गौतम के शब्दों में–''अतृप्ति, निराशा, नियति प्रेम, जीवन की क्षणभंगुरता पर विश्वास की भावनाएँ कवि का एक पक्ष है और आस्था, आशा और संकल्प दूसरा। दोनों के बीच नीरज का व्यक्तित्व झूमता रहा है।''[1]

इनके गीतों का क्षेत्र विषय की दृष्टि से अत्यधिक व्यापक है। आधुनिक साहित्य में उपलब्ध लगभग सभी विषयों से सम्बन्धित गीत इनकी रचनाओं में मिलते हैं। हाँ, इतना अवश्य है कि किसी विषय को इन्होंने अधिक प्रधानता दी है, तो किसी को कम। फिर भी इनके जीवन पर प्रेम का व्यापक प्रभाव है। रूप, प्रेम, श्रृंगार आदि प्रमुख विषय, अनेकानेक रूपों में इनके गीतों में विद्यमान हैं। इनके प्रेम गीतों में प्रेम के कई रंगीन चित्र मिलते हैं।

नीरज जी के विचार में प्रेम सृष्टि का एक मुख्य तत्व है। प्रेम जीवन को गति देने वाली एक महान शक्ति है। प्रेम समस्त मानवीय सम्बन्धों में सर्वश्रेष्ठ है। आगे वे इस प्रकार कहते हैं कि–''प्रेम ने आज तक किसी को गिराया नहीं बल्कि सूर, तुलसी, शैली, खलील, जिब्रान जैसी अनेक महान आत्माओं का निर्माण किया है।..... मेरे मत से सत्य की प्राप्ति के लिए प्रेम भी एक व्यक्तिगत साधना ही है, जो अंत में जाकर विश्व साधना का रूप धारण कर लेती है। मिसाल के तौर पर सगुण भक्ति के रूप में जो अवतारवाद है मेरी समझ में अपने मूल रूप में वह मानवतावाद या प्रेमवाद ही है।''[2]

यह बात भी निर्विवाद है कि तरुणावस्था में व्यक्ति यौवन की उत्ताल, तरंगित भावोर्मियों को अधिक सरलता से आत्मसात् करता है फिर कवि ने तो एक संवेदनशील और सौन्दर्य अन्वेषी दृष्टि पायी है उसे रूप का आकर्षण मोहित करता है, उस प्यार के रूप पर मन का मचलना, मचलने की मादक अनुभूति में उसे प्राप्त करने की इच्छा होना सहज स्वाभाविक है। अतः गीतकार का आसक्त मन रूप और प्रेमाकर्षण की छवियों में उलझता है, तो निश्चय ही गीतकार के गीत इस प्रभाव से किस प्रकार अछूते रह सकते हैं।

गीतकार के शब्दों में देखिए–

''दो गुलाब के फूल छू गए जब से होंठ अपावन मेरे,
ऐसी गंध बसी है मन में सारा जग मधुबन लगता है।''[3]

नीरज जी ने प्रेम को जीवन के एक शाश्वत सत्य के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने प्रेम के महत्व को अनेकानेक रूपों में चित्रित किया है, जैसे–

''इसकी अदा पर मर गई मीरा
मोहे दास कबीरा
अंधे सूर को आंखे मिल गई।''[4]

वस्तुतः नीरज जी प्रेम को सत्य और आदर्श के रूप में स्वीकार करते हैं। प्रेम, सौन्दर्य, रूप–यौवन इनके काव्य के मुख्य विषय हैं। कवि की यह विशेषता है कि उन्होंने गहन से गहन विषय को भी बड़ी सहजता से अभिव्यक्त किया है।

उनके गीतों में प्रणयमूलक प्रेम के दोनों पक्ष मिलन और विरह बहुत ही सहजता एवं मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुए हैं।

मिलन की स्थिति में कवि का भाव देखिए–

''लेकिन तेरा प्यार हृदय को जगा गया, उस दिन से मुझको
छोटी से छोटी पत्ती में सारा बाग नजर आता है।''[5]

लेकिन विरह की स्थिति में गीतकार कुछ इस तरह लिखता है–

''क्यों उसको जीवन भार न हो।
जो जीवन ताप मिटाती है,
युग–युग की प्यास बुझाती है,
जिसके अधरों तक जाकर वह मधु मदिरा ही विष बन जाये।''[6]

''उनके काव्य में यदि एक ओर हमें स्थूल और लौकिक प्रणय की नाना मनोदशाओं के, व्यथा वेदना, अतृप्ति, आशा, उल्लास, उन्माद आदि से पूर्ण सघन से सघन और स्पष्ट चित्र प्राप्त होते हैं, तो दूसरी ओर नियतिवादी और क्षणभंगुरतावादी भूमिका पर की गई रचनाओं के साथ सामाजिक भावभूमि पर स्थित होकर उच्चारित किए गए आस्था, आशा और दृढ़ता के स्वर भी। नीरज के काव्य के ये विविध रूप, लगता है जैसे उनके व्यक्तितव का अभिन्न अंग सा बन गए हों– कारण गहन तथा तीव्र अन्तर्विरोध के बावजूद भी वे आज तक अपने सहअस्तित्व को बिना किसी भी पारस्परिक क्षय के प्रमाणित कर रहे हैं।''[7]

नीरज जी के कई गीतों में मानवतावादी प्रेम के भी दर्शन होते हैं। उन्होंने 'दर्द दिया है' की भूमिका में यही कहा है कि– ''मेरी मान्यता है कि साहित्य के लिए मनुष्य से बड़ा और कोई दूसरा सत्य संसार में नहीं है और उसे पा लेने में ही उसकी सार्थकता है।.... मैं अपनी कविता के द्वारा मनुष्य बनकर मनुष्य तक पहुँचना चाहता हूँ। वही मेरी यात्रा का आदि और अन्त है.....।''[8]

नीरज जी तो मानव प्रेम के इतने प्रबल समर्थक हैं कि इसी एक आधार पर ईश्वर भक्ति तथा ईमान की पहचान करते हैं–

''क्या करेगा प्यार वह भगवान को?

क्या करेगा प्यार वह ईमान को?
जन्म लेकर गोद में इन्सान की
कर न पाया प्यार ओ इंसान को।''[9]

नीरज अपने मानवतावादी गीतों में मानव की महत्ता का जयघोष कुछ इस प्रकार से करते हैं कि–

''कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इन्सान है
मुझको अपनी मानवता पर बहुत–बहुत अभिमान है।''[10]

गीतकार के विचार में अगर विश्व भर में कहीं भी किसी द्वार पर उदासी है तो सृजन अधूरा है। गीतकार ने अपने आपको मिटाकर समाजोद्धार करने की भावना विद्यमान है। उन्हीं के शब्दों में देखिए–

''अंधियारा जिससे शरमाये
उजियारा जिसको ललचाए
ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाये।''[11]

उक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि नीरज पर मानवतावादी विचारधारा का गहरा प्रभाव है। अपने मानवतावादी गीतों के द्वारा वे यही संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य अपने जीवन में नैतिक मूल्यों की अनिवार्य स्थान दे। उनके इन गीतों में विश्वबन्धुत्व, अहिंसा, उदारता आदि उदात्त भावनाओं का समावेश हुआ है।
नीरज जी के गीतों में आध्यात्मिक प्रेम के भी दर्शन होते हैं। नीरज ने अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर प्रेम के मांसल रूप को व्यक्त किया है, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिक पक्ष की भी मार्मिक अभिव्यंजना की है। भक्ति के सभी रूपों का वर्णन नीरज ने अपनी रचनाओं में किया है। उनकी 'निराकार जब तुम्हें दिया आकार', 'सुबह न आई शाम न आई' तथा 'तुझसे लगन लगाई' आदि कविताएँ इसकी ज्वलंत साक्षी हैं।
नीरज जी के आध्यात्मिक गीतों में विरह–वेदना की भी तीव्रता है, जैसे–

''तुझसे लगन लगाई
उमर भर नींद न आई।''[12]

आत्मा अपने प्रियतम अर्थात् परमात्मा तक पहुँचने के लिए सभी कठिनाइयों को झेलती है–

''साथी छोड़े, संगी छोड़े,
जनम–जनम के बंधन तोड़ो
बदनानी से रिश्ते जोड़े,
तब तुम तक आ पाई
न कर अब तो निठुराई।''[13]

नीरज जी ने आध्यात्मिक धरातल पर एक आत्मा के साथी (Soulmate) की कल्पना की है। उनके विचार में इसी आत्मा के साथी की खोज ही मानव को गतिमय और व्याकुल बनाकर जीवन्त रखती है।
गीतकार के आध्यात्मिक गीत भक्ति भावना को व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं। इनका आध्यात्मवाद नीरस एवं शुष्क नहीं है, अपितु भावात्मक एवं प्रेममूलक है। इनके ये गीत पढ़ने के बाद पाठक को अपनी भारतीय संस्कृति की झलक स्पष्ट दिखाई देती है, जिसकी आधारशिला आध्यात्मिकता है।
गीतकार नीरज जी के गीतों में देश प्रेम अथवा राष्ट्रीयता की भावना भी बहुत व्यापक स्तर पर अभिव्यक्त हुई है। उनके गीतों में राष्ट्रीयता एवं देश–प्रेम का वह स्थूल स्वरूप देखने के कम या शायद बिल्कुल न मिले जिसमें राष्ट्र की वन्दना की गई है या फिर सिर्फ उसके भौगोलिक क्षेत्र का वर्णन किया गया है। उनके गीतों में देश–प्रेम एवं राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति जातीय चेतना एवं जनसंवेदना के रूप में हुई है। नीरज जी ने अतिशय संकुचित देशभक्ति का विरोध किया। उन्होंने लिखा–

''कोई नहीं पराया मेरा घर सारा संसार है,
मैं न बंधा हूँ देश काल की जंग लगी जंजीर में
मैं न खड़ा हूँ जाति–पांति की ऊँची–नीची भीड़ में
मेरा धर्म न कुछ स्याही शब्दों का सिर्फ गुलाम है
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट–घट में राम है
मुझसे तुम न कहो मन्दिर–मस्जिद घर में सर टेक दूँ
मेरा तो आराध्य आदमी देवालय हर द्वारा।''[14]

नीरज जी सच्ची राष्ट्रीयता को अन्तर्राष्ट्रवाद का प्रथम सोपान मानते हैं। उनका आदर्श वाक्य यह है–

''फूल डाल का पीछे पहले उपवन का श्रृंगार है।''[15]

अर्थात् मनुष्य किसी देश या प्रान्त का बाद में है, पहले वह समस्त विश्व का है, सारी धरती का है।
देश की अनोखी संस्कृति नीरज जी के रोम–रोम में रची–बसी है। इसीलिए भारतीय संस्कृति के प्रति गीतकार ने सम्पूर्ण ऐतिहासिक, पौराणिक गाथाओं को अपने दृष्टिपथ में रखकर राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय–संस्कृति के रूप में उन्हें अपने गीतों का माधुर्य बनाकर उसके प्रति अपना प्रेमोपहार अर्पित किया है।
ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जिसमें गीतकार की देश प्रेम अथवा राष्ट्रीयता की भावना के दर्शन होते हैं तथा साथ ही सांस्कृतिक चेतना के भी।
इनके गीतों की एक विशेषता प्रकृति प्रेम भी रही है। प्रकृति के अनेक रूप इनके गीतों में देखने को मिलते हैं, प्रकृति यहाँ संवेदना औरक अभिव्यक्ति का साधन भर नहीं है, अपितु यहाँ जीवित और स्वतंत्र सत्ता के रूप में भी प्रतिष्ठित हुई है।
इनके गीतों में प्रकृति छायावादीयुगीन कवियों जैसी मान और प्रतिष्ठा के साथ वन्दित नहीं हुई और न ही उसमें मानवीय भावों के आरोप द्वारा की गयी रहस्यवृत्ति को चित्रित करने का प्रयास है, लेकिन फिर भी इनके गीतों में प्रकृति उपेक्षित नहीं है। कहीं आलम्बन रूप में तो कहीं उद्दीपन रूप में तो कहीं मानवीकृत रूप में वह सर्वत्र यथोचित रूप से प्रतिष्ठित है।

प्रकृति के उद्दीपन रूप का एक उदाहरण देखिए–

''पकी निबौरी, हरे हो गए पीले पत्ते आम के,
लिए बादलों ने हाथों में हाथ झुलसती घाम के,
भरे सरोवर कूप, लग गई नदियाँ सागर के गले,
खिले बाग के फूल, मिले आ पथिक सुबह के शाम के,
कैसे तुमसे मिलूं मगर में जनम–जनम के मीत ओ।
चुन रखा है मुझे साँस ने मिट्टी की दीवार में।''[16]

इस प्रकार हम देखते हैं कि इनके गीतों में अनेकानेक प्रकृति चित्रण मिलते हैं। इनके गीतों में प्रकृति कहीं मनुष्य की दुःख और सुख की सहभागिनी के रूप में चित्रित हुई है तो कहीं अंतरंग चेतना के रूप में। इन्होंने न तो प्रकृति की उपदेशक के रूप में स्वीकार किया और न ही दार्शनिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। इनके गीतों में प्रकृति चित्रण मानवीय धरातल पर हुआ है।
निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नीरज जी के गीतों में प्रेम के अनेकानेक चित्र उपस्थित हैं। लेकिन प्रेम का प्रणयमूलक रूप ही सभी प्रेम रूपों का आधार है, चाहे वो आध्यात्मिक प्रेम हो, या राष्ट्रवादी, मानवतावादी प्रेम, या फिर प्रकृति प्रेम। यदि इनके काव्य से प्रेम तत्व को निकाल दिया जाए तो समस्त काव्य शुष्क मात्र रह जायेगा। नीरज जी की प्रणयभावना स्थूल से सूक्ष्म, ऐन्द्रिक से

सात्विक तथा लौकिक से अलौकिक की ओर उन्मुख है।

सन्दर्भ सूची

1. नवगीतः इतिहास और उपलब्धि–डॉ0 सुरेश गौतम, पृ0–84, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र0सं0–1990
2. गीतकार नीरज–डॉ0 सी बसन्ता, पृ0 39, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र0सं0–1997
3. गीत भी अगीत भी– नीरज, पृ0 17, आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली।
4. गीतकार नीरज–डॉ0 सी बसन्ता, पृ0 51, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र0सं0–1997
5. गीत भी अगीत भी– नीरज, पृ0 32, आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली।
6. नीरज रचनावली–भाग–एक, नीरज, पृ0 7 आत्माराम एण्ड संस, नई दिलली, सं0–2006
7. नया हिन्दी काव्य–डॉ0 शिवकुमार मिश्र, पृ0 319–320 अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर।
8. दर्द दिया है (दृष्टिकोण)– नीरज, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेटी, दिल्ली, 1967।
9. नीरज रचनावली–भाग–एक, नीरज, पृ0 253 आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली, सं0–2006
10. नीरज रचनावली–भाग–एक, नीरज, पृ0 253 आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली, सं0–2006
11. फिर दीप जलेगा–नीरज, पृ0 125, हिन्द पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, वर्ष–2004
12. दर्द दिया है–नीरज, पृ0 77, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेटी, दिल्ली, 1967।
13. दर्द दिया है–नीरज, पृ0 78, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेटी, दिल्ली, 1967।
14. प्राणगीत– नीरज, पृ0 4
15. प्राणगीत– नीरज, पृ0 5
16. दर्द दिया है– गोपालदास नीरज– 55